लेखक परिचय

धनपत राय श्रीवास्तव (31 जुलाई 1880 - 8 अक्टूबर 1936) जो प्रेमचंद नाम से जाने जाते हैं, वो हिन्दी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। उन्होंने सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास तथा कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं। उनमें से अधिकांश हिंदी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुईं। उन्होंने अपने दौर की सभी प्रमुख उर्दू और हिंदी पत्रिकाओं जमाना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि में लिखा। उन्होंने हिंदी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। इसके लिए उन्होंने सरस्वती प्रेस खरीदा जो बाद में घाटे में रहा और बंद करना पड़ा। प्रेमचंद फिल्मों की पटकथा लिखने मुंबई आए और लगभग तीन वर्ष तक रहे। जीवन के अंतिम दिनों तक वे साहित्य सृजन में लगे रहे। महाजनी सभ्यता उनका अंतिम निबंध, साहित्य का उद्देश्य अंतिम व्याख्यान, कफन अंतिम कहानी, गोदान अंतिम पूर्ण उपन्यास तथा मंगलसूत्र अंतिम अपूर्ण उपन्यास माना जाता है।

१९०६ से १९३६ के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन तीस वर्षों का सामाजिक सांस्कृतिक दस्तावेज है। इसमें उस दौर के समाजसुधार आंदोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छूआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता, आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है। हिंदी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में १९१८ से १९३६ तक के कालखंड को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है।

सारांश

कलम के जादूगर मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित महाजनी सभ्यता समाज की सच्चाई को उद्घोषित करने वाला निबंध है। महाजनी सभ्यता प्रथम 'महाजनी तहसीब' शीर्षक से उर्दू मासिक पत्रिका 'कलीम' में अगस्त 1936 में प्रकाशित हुआ। बाद में सितंबर 1936 में हिंदी में प्रकाशित हुआ।

प्रेमचंद प्रस्तुत निबंध के माध्यम से समाज में विकसित पूंजीवादी सभ्यता की विडंबना को बखूबी से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की सफलता हासिल किए हैं। महाजनी सभ्यता प्रेमचंद की अंतिम लेख है। तत्कालीन सामंतवादी समाज के यथार्थ के गोद पर पली यह निबंध पूंजीवाद का अपने में ही खंडन करता है।

महाजनी सभ्यता अर्थात पूँजीवादी सभ्यता जो प्रेमचंद के समय काल से लेकर वर्तमान काल में भी अपनी नग्न विकटता प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचंद जी का यह निबंध वर्तमान काल का भी सजीव दर्पण प्रस्तुत करता है।

महाजनी सभ्यता के माध्यम से लेखक ने अपनी क्रांतिकारी विचारधारा को परिलक्षित किया है। उन्होंने पूंजीवाद का समाज पर पड़ने वाले अभिशाप पर भी दृष्टिगोचर किया है। महाजनी सभ्यता में इंसानियत किस प्रकार पूंजी का खिलौना बनकर उसके अनुसार कार्यरत होता है, उसका विकट रूप दिखाया गया है। पूंजीवाद की इस नग्न सच्चाई के खिलाफ सर्वप्रथम सोवियत रूस ने अपनी आवाज बुलंद कर उसे खत्म करने का सिद्धांत मजबूत किया है।

महाजन का अपने स्वार्थ अनुसार नई सभ्यता के खिलाफ जो झूठा प्रचार है प्रेमचंद ने उस पर करारा आघात किया। उनका मानना है कि जो सभ्यता किसी एक देश के लिए हितकार हो सकता है वह विश्व भर के लिए लाभदायक होने की प्रबल उदाहरण प्रस्तुत करता है। सोवियत रूस में जन्मी इस नई सभ्यता के माध्यम से व्यक्ति स्वाधीनता का स्तर अधिक उत्कृष्ट स्थान पर पहुंच चुका था जिसका समर्थन प्रेमचंद अपने इस लेख के माध्यम से बरकरार करते हैं। साम्राज्यवादियों की व्यक्ति स्वातंत्र्य मुख्यत: युद्ध की तैयारियों में उत्सर्ग हो जाता था। अपने स्वर्थानुसार अधिक मुनाफे कमाने के लिए यही साम्राज्यवादी व्यक्ति स्वातंत्र्य की बलि चढ़ा रहे थे।

अतः प्रेमचंद ने अपनी इस ओजस्वी लेख के माध्यम से साम्राज्यवादी और महाजनी सभ्यता का भंडाफोड़ करते हुए नई सभ्यता (समाजवादी सभ्यता) की उसूलों को, सिद्धांतों को आगे बढ़ाया, पाठकों के समक्ष रखते हुए साम्यवादी विचारधारा को उन्होंने प्रस्तुत किया।

शब्दार्थ

जागीरदारी सभ्यता- जमीदारी प्रथा।
कलेजा- हृदय।
परिगणित- जिसका गणन किसी अनुसूची में हुआ हो।
मूक- चुप।
उपकारक- सहायता करने वाला।
महाजनी सभ्यता- पूंजीवादी सभ्यता।

गरज- स्वार्थजन्य इच्छा।
जड़यंत्र- मशीन।
हुरमतें- इज़्ज़त।
मजहब- धार्मिक संप्रदाय।
सौरभ- महक।

लघु प्रश्नोत्तर

१) "इस महाजनी सभ्यता ने नये- नये नीति- नियम गढ़ लिए हैं।"
क) प्रस्तुत पंक्ति किस पाठ से उद्धृत हैं?
ख) प्रस्तुत पंक्ति का आशय अपने शब्दों में व्यक्त करें।

उ: क) प्रस्तुतपंक्ति'जाँच अभी जारी है'सेउद्धृतहैं।
ख) प्रस्तुत पंक्ति का आशय इस प्रकार है कि महाजनी सभ्यता में पूंजी ने अपनी ताकत को बरकरार रखते हुए, ताकत को दर्शाते हुए प्रत्येक मनुष्य के अंदर की स्वार्थपरता को बढ़ाकर मनुष्यता की भावना का लोप किया है। महाजनी सभ्यता में पैसे की मोल सबसे अधिक है। पैसे से ही मान- प्रतिष्ठा होती है। पैसे ही मनुष्य की जिंदगी और मृत्यु को निर्धारित करती है और इसी के इर्द-गिर्द इसके नीति- नियम घूमते रहते हैं।

२) "साहित्य, संगीत और कला सभी धन की देहरी पर माथा टेकने वालों में है। "
क) प्रस्तुत पंक्ति के लेखक कौन हैं?
ख) प्रस्तुत पंक्ति का भाव स्पष्ट करें।

उ: क) प्रस्तुत पंक्ति के लेखक मुंशी प्रेमचंद हैं।
ख) प्रस्तुत पंक्ति महाजनी सभ्यता से उद्धृत है। उपर्युक्त पंक्ति के माध्यम से प्रेमचंद ने आधुनिक समाज की त्रसादि को दर्शाया है।जहां साहित्य, संगीत और कला पैसे के मोल पर अपना वजूद खोते जा रहे हैं। प्रत्येकप्रतिभावान व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा अपने प्रतिभा के माध्यम से करते थे परंतु आधुनिक काल में हर चीज़ बिकाऊ हो चुका है। प्रतिभा के स्थान पर धन अपना वर्चस्व दर्शा रहा है। संगीत, कला और साहित्य पैसे के बल पर खरीदा तथा लुटाया जा रहा है।

Teacher's Name- Riya Saha